सुपौल में संत रविदास जयंती पर निकली विशाल कलश यात्रा, उमड़ी भीड़!

विषय सूची (Table of Contents):

>> सुपौल में संत रविदास जयंती की धूम भव्य समरसता कलश यात्रा का शानदार आयोजन...
>> समाहरणालय से ऐतिहासिक दुर्गा मंदिर तक निकाली गई आस्था की पावन यात्रा...
>> यात्रा मार्ग का मुख्य विवरण...
>> पारंपरिक परिधानों में कलश लिए जीविका दीदियों और महिलाओं की रही भारी भागीदारी...
>> नारी शक्ति की मुख्य सहभागिता...
>> जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक महकमे ने मिलकर बढ़ाया कार्यक्रम का गौरव...
>> उपस्थित प्रमुख अधिकारी व जनप्रतिनिधि...
>> भजनों और जयकारों से सुपौल शहर के प्रमुख मार्गों का वातावरण हुआ भक्तिमय...
>> भक्तिमय वातावरण के प्रमुख तत्व...
>> समतामूलक समाज के निर्माण के लिए संत रविदास के आदर्शों पर चलने का आह्वान...
>> संत रविदास जी की प्रमुख शिक्षाएं...
>> जाति-भेद से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता और भाईचारा मजबूत करने का संकल्प...
>> अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न...

सुपौल में संत रविदास जयंती की धूम: भव्य समरसता कलश यात्रा का

बिहार के सुपौल जिले में महान समाज सुधारक और संत शिरोमणि रविदास जी की पावन जयंती अत्यंत श्रद्धा, उल्लास और भव्यता के साथ मनाई गई। इस अवसर पर जिला प्रशासन और आम नागरिकों के संयुक्त तत्वावधान में एक विशालसमरसता कलश यात्राका आयोजन किया गया।

इस भव्य धार्मिक और सामाजिक आयोजन में समाज के विभिन्न तबकों, जन प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों तथा जीविका दीदियों ने एकजुट होकर भाग लिया। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में आपसी सद्भाव, एकता और समानता का संदेश फैलाना रहा।

कार्यक्रम के दौरान पूरे शहर में भक्ति की अविरल धारा बहती नजर आई। इस आयोजन से जुड़ी हरlatest updateऔर महत्वपूर्ण गतिविधियों की पूरी सूची नीचे विस्तार से प्रस्तुत की गई है। इसके अलावा आपMAIN NEWS HEADLINE: सर्व समाज उत्थान एवं विकास समिति का हवन संपन्न, 11से संबंधित सामाजिक कार्यों का विवरण भी देख सकते हैं।

समाहरणालय से ऐतिहासिक दुर्गा मंदिर तक निकाली गई आस्था की पाव

समरसता कलश यात्रा का विधिवत शुभारंभ सुपौल के समाहरणालय परिसर से किया गया। वहां से श्रद्धालुओं और महिलाओं का विशाल काफिला मंगल कलश धारण कर शहर के मुख्य मार्गों की ओर अग्रसर हुआ।

यह यात्रा नगर के प्रमुख केंद्रों जैसे डिग्री कॉलेज चौक, गौरवगढ़ चौक, मुख्य बस स्टैंड और लोहिया चौक से होते हुए गांधी मैदान स्थित प्रसिद्ध व ऐतिहासिक दुर्गा मंदिर परिसर में पहुंची। मंदिर परिसर में वैदिक मंत्रोच्चार और विधिवत पूजन के साथ यात्रा का सुखद समापन हुआ।

यात्रा मार्ग का मुख्य विवरण

>> प्रस्थान स्थल:समाहरणालय परिसर (सुपौल)।

>> प्रमुख पड़ाव:डिग्री कॉलेज चौक, गौरवगढ़ चौक, मुख्य बस स्टैंड और लोहिया चौक।

>> समापन स्थल:गांधी मैदान स्थित ऐतिहासिक दुर्गा मंदिर।

>> व्यवस्था की स्थिति (Status):पूरे मार्ग पर सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के पुख्ता इंतजाम रहे।

पारंपरिक परिधानों में कलश लिए जीविका दीदियों और महिलाओं की र

इस कलश यात्रा में महिला शक्ति का अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। सैकड़ों की संख्या में जीविका दीदियां, आंगनबाड़ी सेविकाएं और विकास मित्र पारंपरिक परिधान धारण कर सिर पर पवित्र कलश लिए कतारबद्ध होकर चल रही थीं।

महिलाओं की इस विराट उपस्थिति ने न केवल कार्यक्रम को गरिमामय बनाया, बल्कि यह भी साबित किया कि सामाजिक सुधार और समरसता के अभियानों में नारी शक्ति हमेशा अग्रणी भूमिका निभाती है।

नारी शक्ति की मुख्य सहभागिता

>> जीविका दीदियां:सैकड़ों स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं ने अनुशासन के साथ यात्रा का नेतृत्व किया।

>> आंगनबाड़ी सेविकाएं एवं सहायिकाएं:समाज के पोषण और चेतना निर्माण का संदेश देते हुए सक्रिय रहीं।

>> विकास मित्र:जमीनी स्तर पर सामाजिक उत्थान का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया।

जनप्रतिनिधियों और प्रशासनिक महकमे ने मिलकर बढ़ाया कार्यक्रम

कार्यक्रम में लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों और प्रशासनिक अधिकारियों का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। सभी ने संत रविदास जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर समाज को एकजुट रखने की दिशा में काम करने का संकल्प दोहराया।

स्थानीय निकायों के निर्वाचित सदस्यों से लेकर जिला स्तर के वरिष्ठ अधिकारियों ने पैदल चलकर कलश यात्रा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और आम जनमानस का उत्साहवर्धन किया।

उपस्थित प्रमुख अधिकारी व जनप्रतिनिधि

>> जिला बीस सूत्री समिति अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं समिति के सम्मानित सदस्यगण।

>> नगर परिषद:विभिन्न वार्डों के निर्वाचित पार्षद एवं स्थानीय नागरिक प्रतिनिधि।

>> प्रशासनिक अधिकारी:जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी, जिला परियोजना प्रबंधक (DPM जीविका), प्रखंड विकास पदाधिकारी (सुपौल सदर) तथा प्रखंड कल्याण पदाधिकारी।

भजनों और जयकारों से सुपौल शहर के प्रमुख मार्गों का वातावरण ह

जैसे-जैसे कलश यात्रा आगे बढ़ रही थी, वैसे-वैसे पूरा सुपौल शहर संत रविदास जी के अमर भजनों और जयकारों से गूंज उठा। जगह-जगह स्थानीय नागरिकों और दुकानदारों ने पुष्पवर्षा कर यात्रियों का स्वागत किया।

भक्ति संगीत और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुन पर श्रद्धालु झूमते हुए आगे बढ़ रहे थे, जिससे माहौल पूरी तरह आध्यात्मिक और ऊर्जावान बन गया। बदलते मौसम के बीच भी श्रद्धालुओं का उत्साह कम नहीं हुआ। मौसमी गतिविधियों की जानकारी हेतुकल का मौसम 29 जून: भारी बारिश और तेज हवाओं का अलर्ट, रहें सावधान!पढ़ सकते हैं।

भक्तिमय वातावरण के प्रमुख तत्व

>> मधुर संकीर्तन:संत रविदास के अमर दोहों और रचनाओं का सामूहिक गायन।

>> नागरिक स्वागत:विभिन्न चौक-चौराहों पर शीतल पेय और पुष्पवर्षा द्वारा स्वागत।

>> शांति और सौहार्द:सभी संप्रदायों के लोगों ने यात्रा का गर्मजोशी से अभिवादन किया।

समतामूलक समाज के निर्माण के लिए संत रविदास के आदर्शों पर चलन

यात्रा के समापन पर आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने संत रविदास के जीवन दर्शन पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि संत रविदास जी ने "मन चंगा तो कठौती में गंगा" का विचार देकर आंतरिक शुद्धि और कर्म की प्रधानता को सर्वोपरि रखा था।

अधिकारियों और विद्वानों ने कहा कि 2026 के इस आधुनिक युग में भी उनके विचार प्रासंगिक हैं। जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति सशक्त नहीं होगा, तब तक समग्र विकास अधूरा रहेगा। समाज में शांति बनाए रखने के लिए कानून व्यवस्था भी अहम है, जैसे हाल ही में केंकरिना दुकान में टॉफी के साथ बिक रहा था गांजा और बीयर, पुलिस का छापा!जैसी कार्रवाई से असामाजिक तत्वों पर नकेल कसी गई।

संत रविदास जी की प्रमुख शिक्षाएं

>> समानता:जन्म या जाति के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध।

>> श्रम की प्रतिष्ठा:ईमानदारी से किए गए श्रम को ईश्वर की सच्ची आराधना मानना।

>> मानवता और करुणा:प्रत्येक प्राणी के प्रति दया, प्रेम और सहिष्णुता का भाव रखना।

जाति-भेद से ऊपर उठकर सामाजिक समरसता और भाईचारा मजबूत करने का

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित जनों, अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने सामूहिक रूप से समाज को कुरीतियों और जातिगत पूर्वाग्रहों से मुक्त करने की शपथ ली। सभी ने संकल्प लिया कि वे एक समतामूलक, समृद्ध और संवेदनशील समाज के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

सुपौल में आयोजित यह समरसता कलश यात्रा न केवल एक धार्मिक अनुष्ठान रही, बल्कि इसने सामाजिक एकता और आपसी प्रेम को नई ऊर्जा प्रदान करने का ऐतिहासिक कार्य किया।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

यह भव्य कलश यात्रा संत शिरोमणि रविदास जी की जयंती के पावन अवसर पर सामाजिक समरसता और बंधुत्व को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी।

यात्रा की शुरुआत समाहरणालय परिसर से हुई और यह शहर के प्रमुख चौक-चौराहों से गुजरते हुए गांधी मैदान स्थित ऐतिहासिक दुर्गा मंदिर परिसर में विधिवत संपन्न हुई।

यात्रा में भारी संख्या में जीविका दीदियों, आंगनबाड़ी सेविकाओं तथा विकास मित्रों ने पारंपरिक परिधानों में सिर पर कलश धारण

कर सक्रिय सहभागिता निभाई।

जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला कला एवं संस्कृति पदाधिकारी, डीपीएम जीविका, प्रखंड विकास पदाधिकारी (सुपौल सदर) एवं प्रखंड कल्याण पदाधिकारी सहित कई विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

यात्रा डिग्री कॉलेज चौक, गौरवगढ़ चौक, मुख्य बस स्टैंड तथा लोहिया चौक होते हुए गांधी मैदान दुर्गा मंदिर तक पहुंची।

इसका मुख्य संदेश समाज से जाति-पाति, छुआछूत और वर्ग-भेद को समाप्त कर आपसी भाईचारे, करुणा और समरसता को मजबूत करना था।

हां, जिला बीस सूत्री कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्यगण तथा नगर परिषद के विभिन्न वार्डों के पार्षदों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संत रविदास जी के सामाजिक समानता, श्रम की गरिमा और आंतरिक पवित्रता के विचारों को अपनाकर समतामूलक समाज के निर्माण पर जोर दिया गया।